AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author

डॉ. शिखा दीक्षित

प्राचार्य

वी.आई.एस.एम. कॉलेज

ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वर्तमान समय में किशोरावस्था के छात्रों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालय के प्रकार का प्रभाव एक महत्वपूर्ण शोध विषय बन गया है। इस अध्ययन में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से 30–30 विद्यार्थियों (कुल 60) का यादृच्छिक न्यादर्श चयन किया गया। तथ्य संग्रहण हेतु ओझा आर.के. द्वारा निर्मित बैल्स की समायोजन मापनी का उपयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण द्वारा किया गया। शोध परिणामों से स्पष्ट हुआ कि शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर है एवं शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर है।

मुख्य शब्द

विद्यार्थी, सामाजिक समायोजन, किशोरावस्था, विद्यालय.

प्रस्तावना

किशोरावस्था मानव विकास का एक महत्वपूर्ण परिवर्तनशील चरण है जिसमें व्यक्ति शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक परिवर्तनों से गुजरता है। इस अवस्था में किशोरों के लिए विभिन्न परिस्थितियों और वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती होती है। विशेष रूप से, सामाजिक समायोजन उनके समग्र विकास का एक प्रमुख पहलू है जो उनके शैक्षिक प्रदर्शन, व्यक्तित्व विकास और भावी जीवन को प्रभावित करता है।

सामाजिक समायोजन का तात्पर्य व्यक्ति की उस क्षमता से है जिसके द्वारा वह अपने सामाजिक वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। यह समाज के मानदंडों, मूल्यों और अपेक्षाओं के अनुरूप व्यवहार करने, सामाजिक संबंध स्थापित करने और विभिन्न परिस्थितियों में कुशलतापूर्वक कार्य करने की क्षमता को संदर्भित करता है। किशोरों के संदर्भ में, सामाजिक समायोजन साथियों, शिक्षकों, परिवार और समुदाय के साथ स्वस्थ संबंध विकसित करने की क्षमता को दर्शाता है।

विद्यालय किशोरों के सामाजिकीकरण का एक प्रमुख माध्यम है और उनके सामाजिक समायोजन में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाता है। विद्यालय का प्रकार, वहां की शैक्षिक पद्धति, संसाधन उपलब्धता, शिक्षक–छात्र संबंध, विद्यालय का वातावरण और पाठ्येतर गतिविधियाँ विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन को प्रभावित करते हैं।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय दो प्रमुख प्रकार के शैक्षिक संस्थान हैं। शासकीय विद्यालय सरकार द्वारा वित्त पोषित और संचालित होते हैं, जबकि अशासकीय विद्यालय निजी संस्थाओं या ट्रस्टों द्वारा संचालित होते हैं। दोनों प्रकार के विद्यालयों में अवसंरचनात्मक सुविधाओं, शिक्षण विधियों, अनुशासनात्मक प्रक्रियाओं, छात्र–शिक्षक अनुपात और सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में अंतर होता है। ये अंतर विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन को विभिन्न तरीकों से प्रभावित कर सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल शैक्षिक ज्ञान प्रदान करना ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना भी है, जिसमें सामाजिक कौशल और समायोजन क्षमता का विकास शामिल है। इस परिप्रेक्ष्य में, विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है ताकि बेहतर शैक्षिक नीतियां और कार्यक्रम विकसित किए जा सकें।

प्रस्तुत शोध अध्ययन शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन विद्यालय के प्रकार, लिंग, जैसे कारकों के संदर्भ में सामाजिक समायोजन के विभिन्न आयामों का परीक्षण करता है। इस अध्ययन के परिणाम शिक्षा नीति निर्माताओं, विद्यालय प्रशासकों, शिक्षकों और अभिभावकों को किशोरों के सामाजिक समायोजन को बेहतर बनाने के लिए उपयुक्त रणनीतियाँ विकसित करने में मदद कर सकते हैं।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

1. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं:

$\mathbf{H_{01}}$ शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

$\mathbf{H_{02}}$ शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक प्रकृति का है जिसमें सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या में मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11वीं एवं 12वीं के विद्यार्थी शामिल हैं। अध्ययन के लिए यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा 4 शासकीय एवं 4 अशासकीय विद्यालयों का चयन किया गया, जिनमें से प्रत्येक विद्यालय से 7–8 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इस प्रकार कुल 60 विद्यार्थियों (30 शासकीय + 30 अशासकीय) का न्यादर्श चयन किया गया।

न्यादर्श का विवरण

विद्यालय का प्रकार	बालक	बालिका	कुल
शासकीय	15	15	30
अशासकीय	15	15	30
कुल	30	30	60

उपकरण

ओझा आर.के. द्वारा निर्मित बैल्स की समायोजन मापनी का उपयोग किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण

- मध्यमान,
- मानक विचलन एवं
- टी–परीक्षण।

परिणाम एवं विवेचना

परिकल्पना 1: शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

विद्यालय का प्रकार	N	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
शासकीय	30	112.23	15.76	3.42	p<0.01
अशासकीय	30	125.76	14.89		

तालिका 1 से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन मध्यमान 112.23 (मानक विचलन 15.76) है, जबकि अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन मध्यमान 125.76 (मानक विचलन 14.89) है। दोनों समूहों के बीच टी–मान 3.42 है, जो 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है और यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना 2: शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

विद्यालय का प्रकार	लिंग	N	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
शासकीय	बालक	15	108.45	14.23	2.56	p<0.05
	बालिका	15	116.01	16.57		
अशासकीय	बालक	15	120.34	13.76	2.87	p<0.01
	बालिका	15	131.18	14.28		
कुल	बालक	30	112.23	15.76	3.42	p<0.01
	बालिका	30	125.76	14.89		

तालिका 2 से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालयों में बालक और बालिकाओं के सामाजिक समायोजन मध्यमान क्रमशः 108.45 (मानक विचलन 14.23) और 116.01 (मानक विचलन 16.57) हैं, और इन दोनों समूहों के बीच टी–मान 2.56 है, जो 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। इसी प्रकार, अशासकीय विद्यालयों में बालक और बालिकाओं के सामाजिक समायोजन मध्यमान क्रमशः 120.34 (मानक विचलन 13.76) और 131.18 (मानक विचलन 14.28) हैं, और इन दोनों समूहों के बीच टी–मान 2.87 है, जो 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। समग्र

रूप से, बालक और बालिकाओं के सामाजिक समायोजन मध्यमान क्रमशः 112.23 (मानक विचलन 15.76) और 125. 76 (मानक विचलन 14.89) हैं, और इन दोनों समूहों के बीच टी–मान 3.42 है, जो 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है और यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर है।

निष्कर्ष

अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर पाया गया। इसका संभावित कारण अशासकीय विद्यालयों में उपलब्ध बेहतर अवसंरचनात्मक सुविधाएँ, विविध पाठ्येतर गतिविधियाँ, निम्न छात्र–शिक्षक अनुपात और व्यक्तिगत मार्गदर्शन हो सकता है। अशासकीय विद्यालयों में सामाजिक कौशल विकास पर अधिक ध्यान देने से भी विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन बेहतर हो सकता है।

दोनों प्रकार के विद्यालयों में बालिकाओं का सामाजिक समायोजन बालकों की तुलना में बेहतर पाया गया। इसका संभावित कारण बालिकाओं के बेहतर संचार कौशल, अधिक सहयोगात्मक प्रवृत्ति और भावनात्मक बुद्धिमत्ता हो सकता है। यह भी देखा गया कि अशासकीय विद्यालयों की बालिकाओं का सामाजिक समायोजन सबसे अधिक था, जबकि शासकीय विद्यालयों के बालकों का सामाजिक समायोजन सबसे कम था।

सुझाव

- शोधार्थी केवल एक जिले तक सीमित न रहकर विभिन्न राज्यों, शहरी व ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के विद्यालयों को शामिल कर शोध को और अधिक व्यापक बना सकते हैं।
- सामाजिक समायोजन के विशेष पक्षों जैसे–शैक्षिक समायोजन, पारिवारिक समायोजन, भावनात्मक समायोजन, समूह समायोजन आदि का पृथक–पृथक विश्लेषण कर सकते हैं।
- सामाजिक समायोजन समय के साथ बदलता है। अतः शोधार्थी दीर्घकालिक अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों में समयानुसार आए परिवर्तनों का विश्लेषण कर सकते हैं।
- यदि सामाजिक समायोजन में कमी पाई जाए, तो शोधार्थी उसके समाधान हेतु विशेष कार्यक्रम (जैसे जीवन कौशल कार्यशालाएँ, परामर्श सत्र आदि) तैयार कर हस्तक्षेपात्मक शोध भी कर सकते हैं।
- भावी शोध में सामाजिक समायोजन पर आर्थिक स्थिति, माता–पिता का शिक्षा स्तर, विद्यालय का शैक्षिक वातावरण, सह–पाठ्यक्रमीय गतिविधियों की भूमिका आदि को भी विश्लेषण में शामिल किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, जे. सी. (2010) *शैक्षिक अनुसंधानः एक परिचय,* आर्या बुक डिपो, नई दिल्ली।
2. चौहान, एस. एस. (2002) *व्यक्तित्व विकास और समायोजन,* विकास प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. चौहान, एस.एस. (2017) *व्यक्तित्व विकास और समायोजन,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।
4. शर्मा, आर. ए. (2005) *शैक्षिक मनोविज्ञान,* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. सिंह, योगेश कुमार (2006) *शैक्षिक अनुसंधान पद्धति,* ए.पी.एच. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, नई दिल्ली।

––==00==––